Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

गंगा का पौराणिक स्वरूप–उद्गम एवं आख्यान

डॉ0 प्राची अग्रवाल
सहायक आचार्य, मुलतानीमल मोदी कॉलिज मोदीनगर, गाजियाबाद।

Article Info

Accepted : 20 Jan 2025
Published : 10 Feb 2025

Publication Issue :
January-February-2025
Volume 8, Issue 1

Page Number : 39-43

सारांश– सम्पूर्ण विश्व जड़ चेतन का मिश्रित स्वरूप है। जड़ वस्तुओं में जितनी शक्तियाँ देखने को मिलती है, वे सब दैवी शक्ति के आश्रय से ही सम्भव होती है। वही दैवी शक्ति संसार का संरचन, पालन व विध्वंस करती है। जल वायु, अग्नि, आकाश और पृथ्वी के इन पंच महाभूतों में जो भी शक्ति है उसकी अधिष्ठातृ कोई न कोई चेतन शक्ति अवश्य है, इन्हीं चेतन शक्ति के अधिष्ठातृत्व से जड़ शक्तियाँ कार्य करने में समर्थ होती है। इसीलिए वह 'देव' या 'देवी' शब्द से व्यवहृत होती हैं। गंगाजल के भीतर भी चैतन्य रूपा गंगादेवी विराजमान न होती तो इनके स्पर्श से राजा सगर के साठ हजार पुत्रों की मुक्ति न हुई होती। असंख्य जीवों का कल्याण, उनकी मुक्ति, मन व आत्मा को पवित्र करने की शक्ति माँ गंगा की ही देन है। गंगा 'हर–हर' की अहोरात्र गर्जना के साथ पृथ्वी पर अवतरित होती है। हिमालय स्थित उस उद्गम स्थान की कल्पनामात्र भी मनुष्य के अति क्षुब्ध अन्तःकरण को क्षणमात्र में विलक्षण शान्ति का अनुभव करा देती हैं। गंगा का उद्गम स्थल 'गोमुख' है, गोमुख में गंगा कहाँ से प्रकट होती हैं, यह भी एक विचारणीय प्रश्न है। गंगा तो इस हिमपर्वत पर हिमरूप में प्राप्त होकर तरल रूप में प्रवाहित होती है। भारत के अनेक स्थलों को आप्लावित करती हुई गंगासागर में विलीन हो जाती है। समस्त वैदिकग्रन्थ, पुराण, साहित्य माँ गंगा की अखण्ड महिमा का गान करते हैं। सभी पुराणों में उनसे सम्बन्धित आख्यान प्राप्त होते हैं। माँ गंगा के पतितपावनी रूप का शतयोजन दूर रहकर भी स्मरण करता है। वह 'मुंच्यते सर्वपापेभ्यः विष्णुलोकं स गच्छति' मुक्त होकरं विष्णुलोक को चला जाता है।

मुख्य शब्द– गंगा, पौराणिक, आख्यान, आकाश, गोमुख, पुराण, साहित्य, हिमालय।

जल मानव जीवन के लिए ही नहीं प्रत्युत चेतन–अचेतन सब, जीवों के लिए 'जीवनं भुवनं जलम्' के अनुसार जल जीवधारियों के लिए प्राणस्वरूप है। पंच महाभूतों में से एक आवश्यक महाभूत है। वेदों में जल को विविध नामों से व्यवहृत किया गया है–अम्भः मरीचि, मर तथा आपः। यह चारों क्रमशः घुलोक, अन्तरिक्ष, पृथ्वी तथा पृथ्वी के अधस्थ लोकों में व्याप्त है। इनमें अम्भः को मूल जल तत्व कहा जाता है अम्भः सूक्ष्म रूप में जल की संज्ञा है। यह शुद्ध रस रूप द्रव है। गुरू होने

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

से यह वायुमण्डल में अधिक नहीं टिक सकता है और स्थूल जल का रूप धारण कर लेता है यही गंगा की अजस दिव्य धारा में प्रवाहित होता है।

'गम्' धातु के साथ 'गन' पूर्व 'यप्' प्रत्यय करने से निष्पन्न 'गंगा' शब्द की निष्पत्ति होती है। यह भारत की पवित्रतम्, नदी के रूप में जानी जाती है। यह अपने प्रवाह से भारतवर्ष को पवित्र करती हुई गोमुख से प्रकट होकर मैदानी भाग में अपने व्यापक प्रवाह के साथ आगे बढ़कर बहुविध स्थानों को तीर्थ बनाती हुई गंगासागर के लिए प्रस्थान करती है।

भारतीयता की पहचानरूपिणी गंगा का उल्लेख संसार के सबसे प्राचीन, सम्मान्य प्रामाणिक एवं पवित्र ग्रन्थ ऋग्वेद में तीन स्थलों पर बीज रूप में प्राप्त होता है ।

अधि बृबुः पणीनां वर्षिष्ठे मूर्धन्नस्थात् ।उरू कृक्षो न गााड्.गयः।। ऋग्वेद 6/45/31

x x x x

इमं में गंगे यमुने सरस्वाते शताद्रि स्तोमं सचता परूष्णया।। असिक्न्या मरुदवृधे वितस्तयार्जी–कीये श्रृणुह्या सषोमया।। ऋग्वेद (10/75/5)

x x x x x

शतपथ ब्राह्मण 13/5/4/11/13 एवं ऐतरेय ब्राह्मण (39/9)में गंगा एवं यमुना के किनारे पर भरत दौष्यन्तिकी की विजयों एवं यज्ञों का उल्लेख हुआ है।

पुराणों का अवलोकन करने के पश्चात् सिद्ध होता है कि लगभग सभी पुराणों में गंगा को अमृत स्वरूपिणी कहा गया है। वराह पुराण के अध्याय 82 में गंगा की व्युत्पत्ति 'गा गता' (जो पृथ्वी की ओर गयी हो) है। पद्मपुराण के सृष्टि खण्ड में गंगा के विषय में मूल मन्त्र दिया है–––ऊँ0 नमो गंगायै विश्वरूपिण्यै नारायण्यै नमों नमः ।। नारदीय पुराण में गंगा के पुनीत स्थल के विस्तार के विषय में आया है–

तीराद् गव्यूतिमात्रं तु परितः क्षेत्रमुच्यते ।। उत्तर 43/119–120)

विष्णु पुराण में गंगा को विष्णु के बाँये पैर के अँगूठे, के नख से प्रवाहित माना है शैव पुराणों में ऐसा कथन है कि शिव ने सात जगह से अपनी जटाओं में से सात धाराएँ निकाली जिनमें से तीन (नलिनी, हादिनी, पावनी) पूर्व की ओर, तीन (सीता, चक्षुस एवं सिन्धु) पश्चिम की ओर प्रवाहित हुई और सातवी धारा भगीरथी हुई मत्स्यपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, कूर्मपुराण एवं वराहपुराण का कथन है कि गंगा सर्वप्रथम सीता, अलकनन्दा, सुचक्षु एवं भद्रा नामक चार विभिन्न धाराओं में बहती है, अलकनन्दा दक्षिण की ओर बहती है, भारतवर्ष की ओर आती है और सप्तमुखों में होकर समुद्र में गिरती है। ब्रह्मपुराण में गंगा को विष्णु के चरण से प्रवाहित एवं शिव के जटा–जूट में स्थापित माना गया है।

गंगा की प्रशस्ति का गायन भी अनेक पुराणों ने किया है विष्णु पुराण में तो यहाँ तक कहा गया है कि गंगा के नाम लेने मात्र से तीन जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं–

श्रुताभिलषिता दृष्टा स्पृष्टा पीतावगहिता। या पावयति भूतानि कीर्तिता च दिने–दिने।
गंगा गंगेति यैर्नाम योजनानां शतेष्वपि। स्थितैरूच्चारितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।।

विष्णुपराण 2/8/20–121)

पद्म पुराण में भी इसी सन्दर्भ में कहा गया है कि गंगा कहने मात्र से मनुष्य नरक में नही पड़ता–

गंगा गंगेति यो ब्रूयोद्योजनानां शतैरपि नरो न नरकं योति किं तया सदृशं भवेत।।

गंगा गंगेति यो व्रयोद्योजनानां शतैरपि, मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोक स गच्छति।।

ब्रह्मपुराणानुसार गंगाजल अमृततुल्य है–

अमृतं जाह्नवीतोयममृतं स्वर्णमुच्यते। अमृतं गोभवं चार्ज्यममृतं सोम एवं च। बृहन्नारदीय पुराण गंगाजल को कभी भी पर्युषित अर्थात बासी नहीं मानता।

वर्ज्यं पर्युषितं तोयं, वर्ज्यं पर्युषितं दलम्। न वर्ज्यं जाह्नवीतोयं न वज्यैः तुलसीदलेम्।।

नारदपुराण में जीवनदायिनी माँ गंगे को नमस्कार किया गया है–––

स्थाणजंगमसम्भूतविषहन्त्रि नमोऽस्तु ते। संसारविषनशिन्यै जीवनायै नमो नमः।। तापत्रितयहन्त्यै च प्राणेश्वर्यै नमो नमः। शान्त्यै सन्तापहारिण्यै नमस्ते सर्वभूतयें।।

पुराणों से इतर संस्कृत साहित्य के आदि काव्यों रामायण व महाभारत में कई स्थलों पर गंगा की अद्भुत महिमा का व्याख्यान किया गया है। महर्षि, वाल्मीकि ने गंगाष्टकम् में लिखा है–

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाश्रृङ्.गारहारावलि, स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये।।

त्वत्तीरे वसतस्त्वदबु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेड्.खत स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदेर्पितदृशः स्यान्में शरीरव्ययः।।

महाभारत के वनपर्व में महर्षि पुलस्त्य ने कहा है कि गंगा नाम लेने मात्र से सात पीढियों तक का उद्धार कर देती है–

पुष्करे तु कुरूक्षेत्रे, गंगायां मगधेषु च। स्नात्वा तारयते जन्तुः सप्त सप्तावरांतथा।

X X X X

पुनीति कीर्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति। अवगाढा च पीता च पुनात्यासप्तम कुलम्।।

गीता में भगवान कृष्ण कहते है– स्त्रोतम् सामस्मि जाहवी।

X X X X

गीता गंगोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।

संस्कृत साहित्य परम्परा में भी विभिन्न मनीषियों ने गंगा माँ की अप्रतिम महत्ता का उल्लेख किया है।

पृथ्वी पर माँ गंगा का अवतरण, पवित्र गोमुख नामक हिमनद से होता है, इसे ही गंगोत्री उद्गम कहते है। यह चौलम्बा चोटी के दूसरी और स्थित है। यही से भिल्लुन, गंगा निकलकर भागीरथी से मिल जाती है। भागीरथी उद्गम स्थल से निकलने के पश्चात 35 कि0मी0 तक पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होने के बाद दक्षिण की ओर मुड जाती है। वहाँ वृहद हिमालय के अन्दर एक यह गहरी घाटी काटती है तथा आगे 140 कि0मी0 की दूरी तक मध्य हिमालय में प्रवाहित होती है। इसकी प्रमुख सहायक नदी अलकनन्दा है, जो देवप्रयाग नामक स्थान पर इससे मिलती है।

अलकनन्दा का उद्गम अल्कारी नामक हिमनद से हुआ है। यह बद्रीनाथ के उत्तर में स्थित हैं। यह नदी प्रारम्भ में बड़े वेग के साथ तीव्र धारा के रूप में बहती है। आगे एक हिमखण्ड के द्वारा मार्ग अवरूद्ध होने पर यह हिमखण्ड के नीचे से होकर बहती हुई अपनी घाटी का निर्माण करती है। इसमें अलकनन्दा मन्दाकिनी, विष्णुगंगा, नन्दिनी पिण्डार एवं धवलगंगा नदियाँ आकर गिरती है। मन्दाकिनी नदी गौरीकुण्ड हिमनद से निकलती है। इसके निकट केदारनाथ जी स्थित हैं। मन्दाकिनी दक्षिण की ओर बहकर रूद्रप्रयाग के निकट अलकनन्दा से मिल जाती है । कर्णप्रयाग के निकट पिण्डार गंगा

नदी अलकनन्दा में मिलती हैं। विष्णुप्रयाग के निकट नन्दिनी नदी इसमें मिलती हैं। इन पाँचों की सम्मिलित धारा ही गंगा अभिधान से हिमालय को लक्ष्मण झूला के निकट छोड़ती हुई अनेक स्थलों को आप्लावित करती हुई मैदानी भागों में प्रवेश करती है। इस प्रकार गंगा हिमालय से बंगालादेश तक लगभग 2515 कि0मी0 का सफर तय करती है।

पतितपावनी गंगा के विषय में सभी पुराणों में कतिपय आख्यान मिलते हैं। कई पुराणों में एक से आख्यान है, जिनमें परस्पर समानता है और कई पुराण अलग–अलग व्याख्यानों का वर्णन करते हैं। इनमें से कुछ आख्यानों का वर्णन इस प्रकार है।

सगरपुत्रों के उद्धार के लिए गंगावतरण की कथा का उल्लेख कई पुराणों में मिलता है। अयोध्या नरेश सगर के साठ हजार पुत्रों को महर्षि कपिल ने अपनी हुंकार से भस्म कर दिया। राजा सगर के प्रपौत्र भागीरथ ने एक सहस्र वर्ष कठोर तप के पश्चात जगत्पावनी गंगा को पृथ्वी पर अवतरित किया।

एक अन्य व्याख्यान में वज्र के द्वारा वृत्रासुर का वध करने से इन्द्र को ब्रह्महत्या लगने का उल्लेख है। इन्द्र ने इस पातक से शुद्ध होने के लिए हाटकेश्वर क्षेत्र में गंगाजी में स्नान करके भगवान हाटकेश्वर महोदव की आराधना की और ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त हो गये।

महाभागवत पुराण के एक आख्यान में सर्वान्तक व्याध की कथा मिलती है। सर्वान्तक व्याध अत्यन्त दुराचारी, पराये धन का हरण करने वाला, प्राणियों को मारकर उनके मांस को बेचकर आजीविका चलाने वाला था। वह राजा चित्रसेन के काराागार में मृत्यु को प्राप्त हुआ। धर्मराज के द्वारा पापा–पुण्य का विवेचन करने पर उसने एक बार गंगास्नान किया था, इस पुण्य द्वारा वह शिवलोक को प्राप्त हुआ।

एक अन्य आख्यान में वर्णित है कि माता लक्ष्मी, सरस्वती एवं गंगाजी तीनों भगवान श्री हरि की भार्या हैं। बहुपत्नी होने के कारण गंगा जी एवं सरस्वती में आपस में विवाद हुआ और आवेश में आकर दोनों ने एक–दूसरे को शाप दे दिया। इसी के फलस्वरूप श्री हरि की आज्ञा से गंगा भागीरथी के द्वारा पृथ्वी पर अवतरित हुई और सरस्वती भी नदी रूप में विख्यात हुई।

ब्रह्मपुराण में एक आख्यान आता है। गौतम ऋषि को गोहत्या का पाप लगा और उसके उद्धार के लिए उन्होंने भगवान शिव की घोर तपस्या करके भगवती गंगा को पृथ्वी पर अवतरित किया। गंगा की वह धारा गौतमी गंगा के नाम से विख्यात हुई।

भगवान विष्णु के वामन अवतार से भी विष्णुपदी गंगा के अवतरण का आख्यान श्रीमद्भागवत पुराण में मिलता है। वामनावतार में भगवान विष्णु द्वारा समस्त त्रिलोक नाप लिये जाने पर ब्रह्मा जी ने उनके दूसरे पग का अर्ध्य–पाद्य से पूजन किया। भगवान ब्रह्मा के कमण्डल का वही जल विश्वरूप भगवान विष्णु के पॉव पखारने से पवित्र होने के कारण गंगा जी के रूप में परिवर्तित हो गया।

धातुः कमण्डलुजल तदुरूक्रमस्य, पादावनेजनपवित्रतया नरेन्द्र।
स्वर्धुन्यभून्नभसि सा पतती निम्राष्टि लोकत्रये भगवतो विश्वदेव कीर्तिः।।

एक अन्य आख्यान में उल्लेख मिलता है कि सौ वर्ष का अकाल पड़ जाने पर महर्षि अत्रि ने अपनी पत्नी श्री अनसूया के साथ 54 वर्ष तक तपस्या की। अत्रि द्वारा अनसूया से जल माँगने पर अनसूया जी ने माँ गंगा से जल की प्रार्थना की और माँ गंगा ने उपस्थित होकर उनकी प्रार्थना पर पृथ्वी पर रहना स्वीकार किया।

गंगा के अवतरण के अन्य आख्यान भी पुराणों में मिलते हैं। जिनमें धनाधिप वैश्य की कथा चण्डशर्मा ब्राह्मण की पाप शुद्धि, गंगा के भीष्मजननी होने का आख्यान, महातपस्वी जहनु द्वारा प्रकट होने की कथा आदि प्रमुख है।

भगवती गंगा देवमाता है, लोकमाता है, वेदमाता है, हमारी अस्मिता की पहचान है। यह विडम्बना ही है कि मातृस्वरूपा गंगा का ध्यान न रखकर हम सभी इसे मलिन से मलिनतर करते जा रहे हैं। कोविद–19 महामारी के समय जब लॉकडाउन से आर्थिक गतिविधियाँ बन्द है ऐसे समय में माँ गंगा ने पुनः स्वच्छ रूप धारण कर लिया है। आगामी समय में हमें विशेष रूप से सचेष्ट रहने की आवश्यकता है तभी हम अपनी पीढ़ियों को गंगा माता के औषधीय गुणों एवं लाभों को दे सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- ऋग्वेद – चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।
2- शतपथ ब्राह्मण – चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।
3- ऐतरेय ब्राह्मण – चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।
4- वराह पुराण – गीता प्रेस, गोरखपुर।
5- पदम पुराण – गीता प्रेस, गोरखपुर।
6- विष्णु पुराण – चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।
7- ब्रह्मपुराण – चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी
8- नारद पुराण – गीता प्रेस गोरखपुर।
9- रामायण – गीता प्रेस गोरखपुर।
10- महाभारत – गीता प्रेस गोरखपुर।
11- संस्कृत के पौराणिक आख्यान – चौखम्बा प्रकाश वाराणसी।